



ChalisaPDF

गणपति जी की आरती

॥ आरती श्री गणपति जी ॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा, सेवा से सब विघ्न टरें।

तीन लोक के सकल देवता, द्वार खड़े नित अर्ज करैं॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥

रिद्धि-सिद्धि दक्षिण वाम विराजें, अरु आनन्द सों चमर करैं।

धूप-दीप अरु लिए आरतीभक्त खड़े जयकार करैं॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥

गुड़ के मोदक भोग लगत हैं मूषक वाहन चढ्या सरैं।

सौम्य रूप को देख गणपति के विघ्न भाग जा दूर परैं॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥

भादो मास अरु शुक्ल चतुर्थी दिन दोपारा दूर परैं।

लियो जन्म गणपति प्रभु जी दुर्गा मन आनन्द भरैं॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥

अद्भुत बाजा बजा इन्द्र का देव बंधु सब गान करैं।

श्री शंकर के आनन्द उपज्यानाम सुन्यो सब विघ्न टरैं॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥



आनि विधाता बैठे आसन, इन्द्र अप्सरा नृत्य करें।
देख वेद ब्रह्मा जी जाको विघ्न विनाशक नाम धरें॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥

एकदन्त गजवदन विनायक त्रिनयन रूप अनूप धरें।
पगथंभा सा उदर पुष्ट है देव चन्द्रमा हास्य करें॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥

दे शराप श्री चन्द्रदेव को कलाहीन तत्काल करें।
चौदह लोक में फिरें गणपति तीन लोक में राज्य करें॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥

उठि प्रभात जप करें ध्यान कोई ताके कारज सर्व सरें
पूजा काल आरती गावें। ताके शिर यश छत्र फिरें॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥

गणपति की पूजा पहले करने से काम सभी निर्विघ्न सरें।

सभी भक्त गणपति जी के हाथ जोड़कर स्तुति करें॥

गणपति की सेवा मंगल मेवा...॥